गधों पर सवार पुस्तकालय

जेनिट विन्टर

अनुवादः अरविन्द गुप्ता

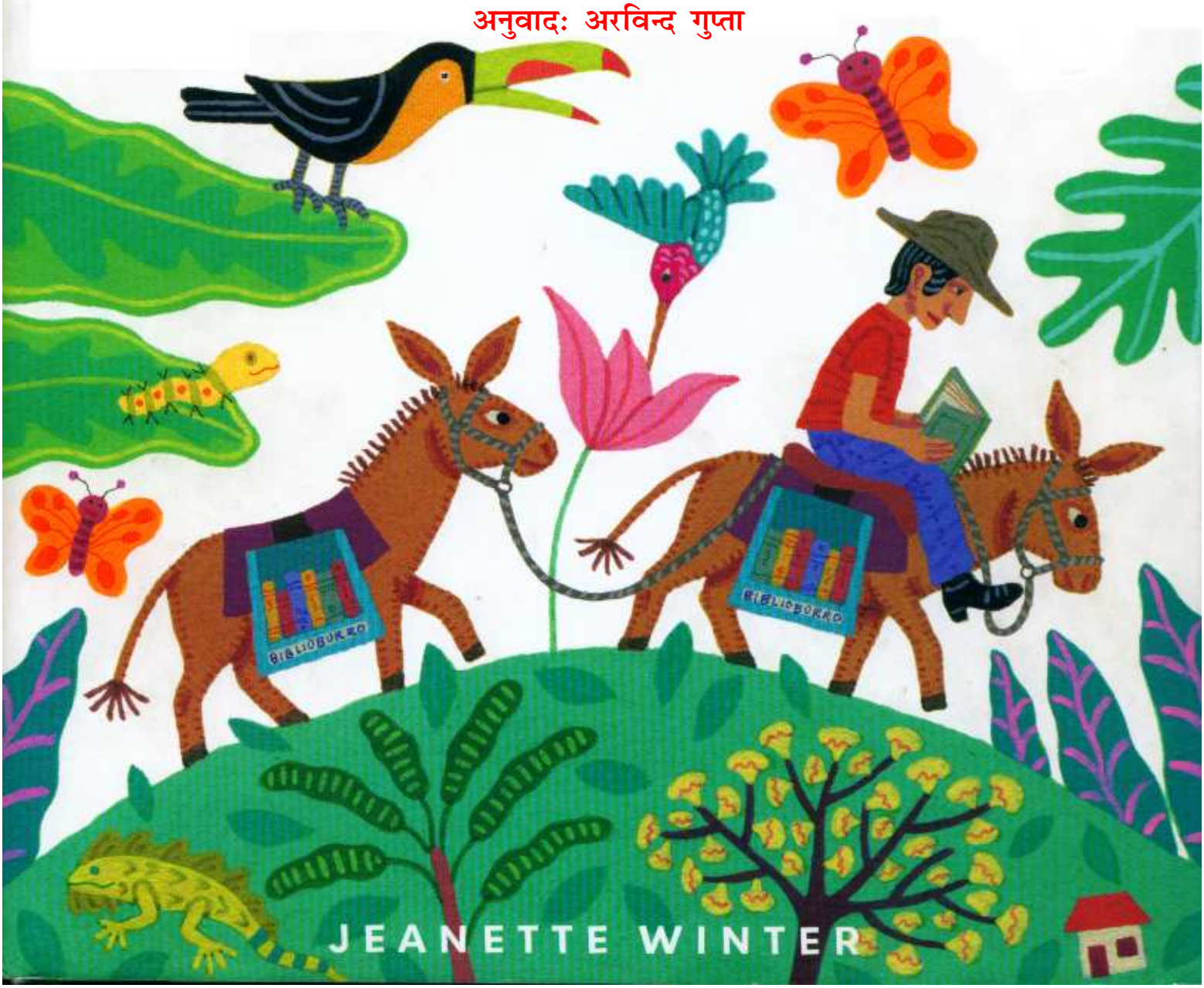

कोलम्बिया देश की एक सच्ची कहानी

Meet the author and illustrator
and get activities at

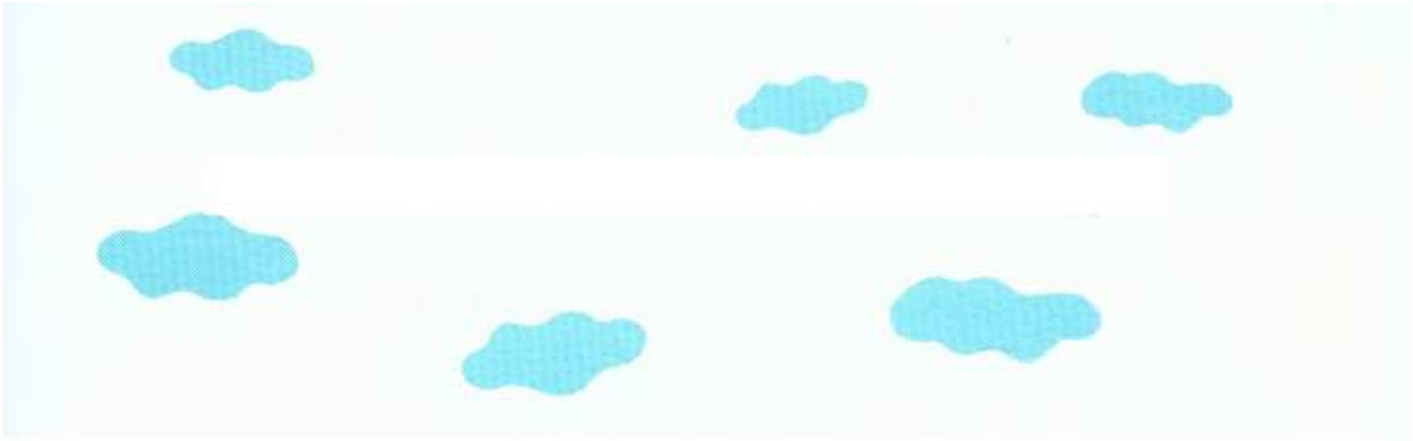

देमेत्री और कैम्पबैल के लिए

कोलम्बिया के घने जंगलों में एक आदमी रहता था जिसे किताबों से बहुत प्यार था।

उसका नाम था लुइस।

जैसे ही एक किताब खत्म होती वो झट से दूसरी पुस्तक घर ले आता। जल्द ही उसका पूरा घर किताबों से भर गया।

उसकी पत्नी डायना उस पर बहुत गुस्सा करती।

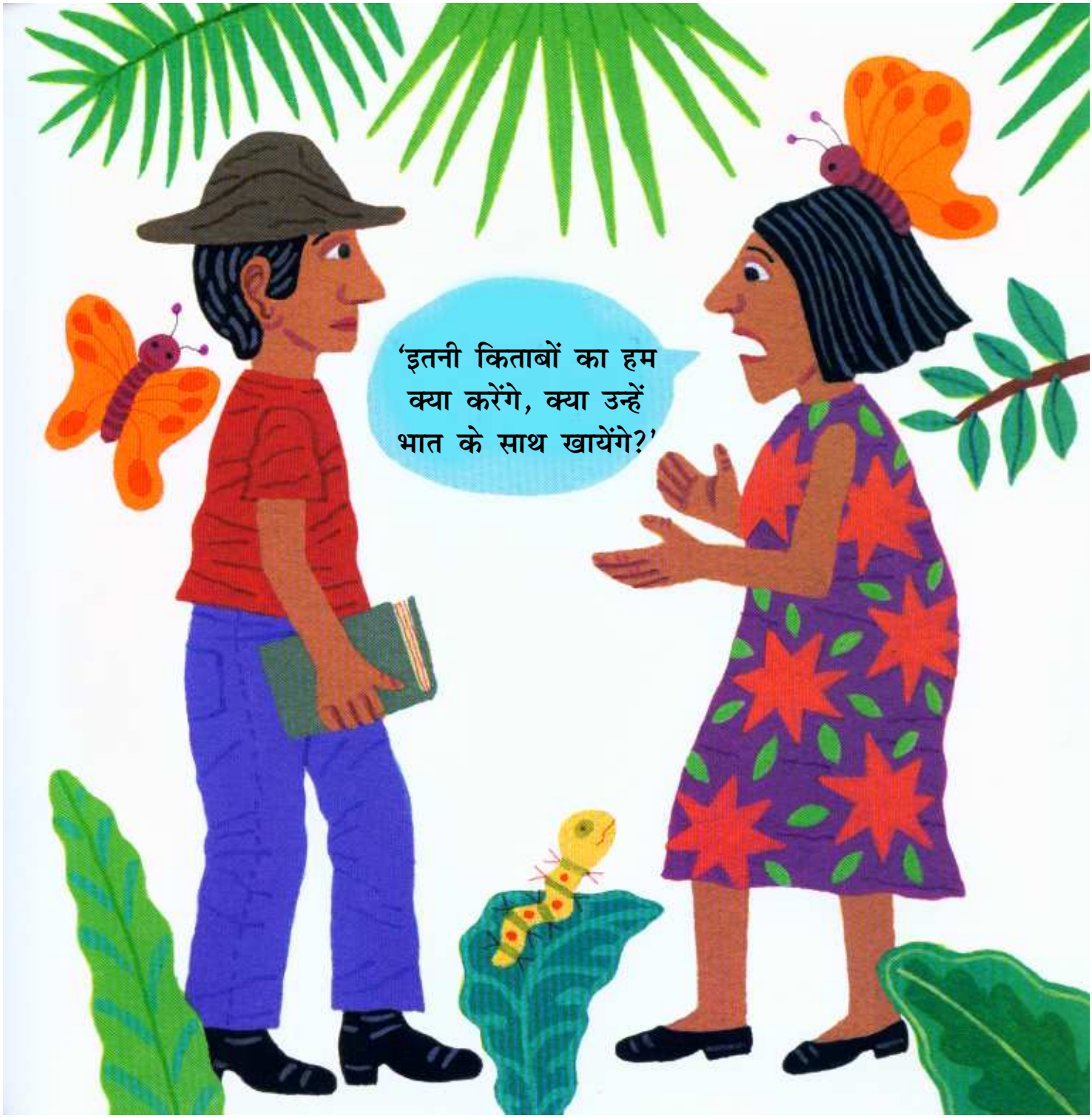
'इतनी किताबों का हम
क्या करेंगे, क्या उन्हें
भात के साथ खायेंगे?'

लुइस बहुत देर तक सोचता रहा।
फिर उसके दिमाग में एक विचार आया।

‘मैं इन किताबों को पहाड़ियों के उस पार उन लोगों के
लिए ले जाऊंगा जिनके पास कोई किताब नहीं हैं।

एक गधे पर मैं किताबें लादूंगा
और दूसरे पर खुद सवार हो जाऊंगा।’

फिर लुइस ने दो हट्टे-कट्टे गधे खरीदे।
उनके नाम थे एल्फा और बीटो।

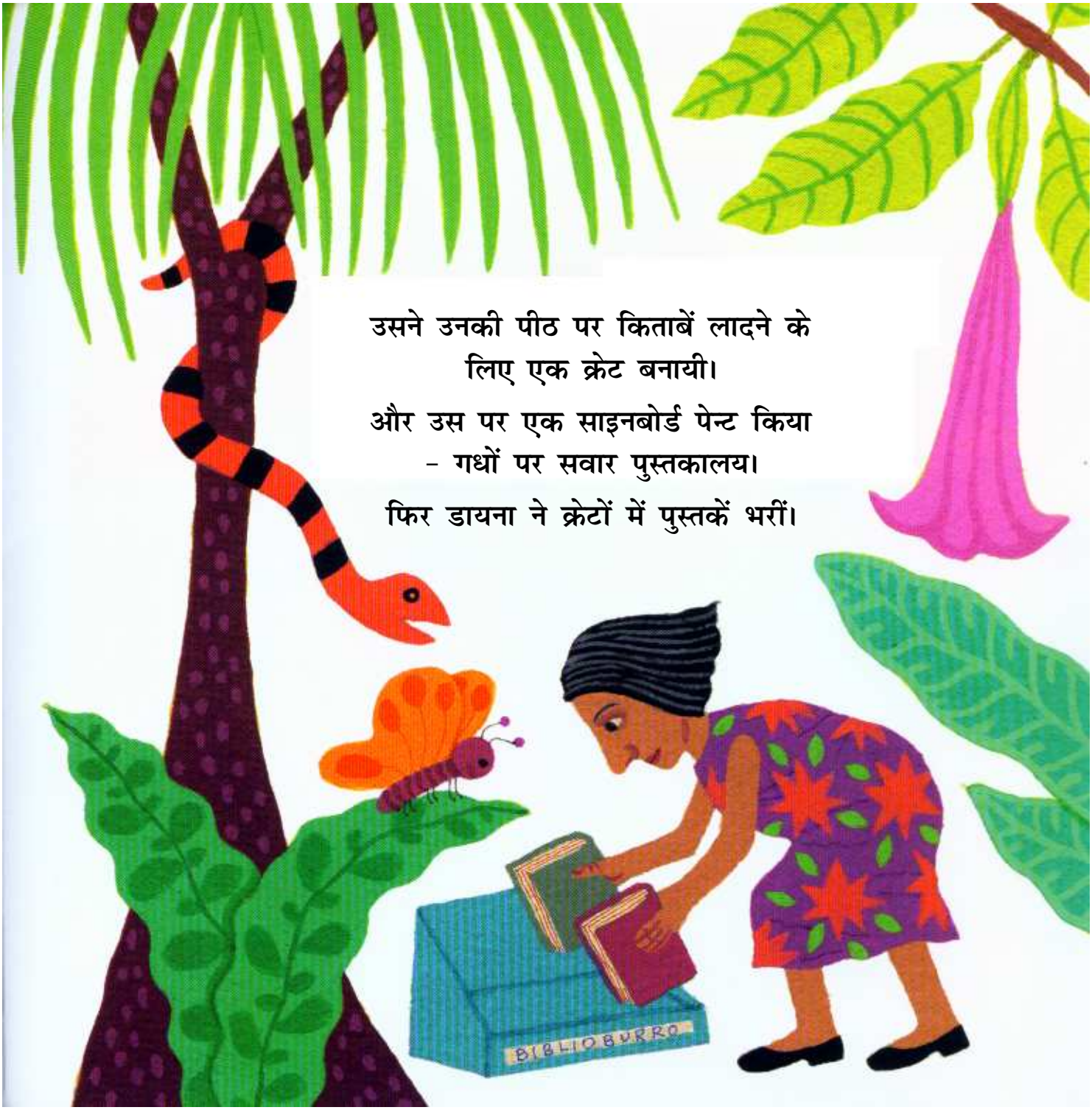

उसने उनकी पीठ पर किताबें लादने के
लिए एक क्रेट बनायी।

और उस पर एक साइनबोर्ड पेन्ट किया
– गधों पर सवार पुस्तकालय।

फिर डायना ने क्रेटों में पुस्तकें भरीं।

हर हफ्ते लुइस, एल्फा और बीटा दूर-दराज
पहाड़ियों पर स्थित बियाबान गांवों का दौरा करते।

इस हफ्ते वो इल-टोरमेन्टो नाम के गांव में जायेंगे।

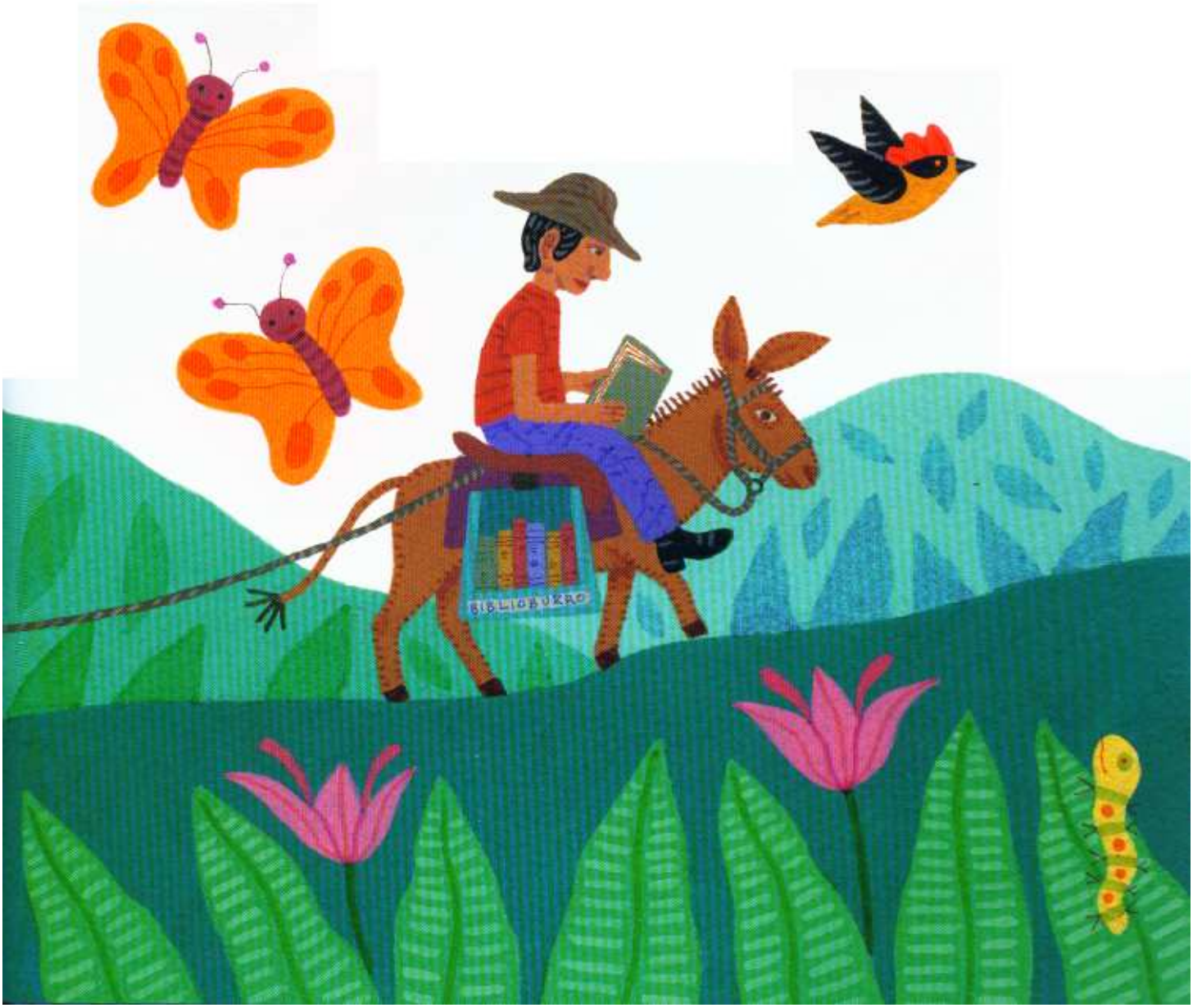

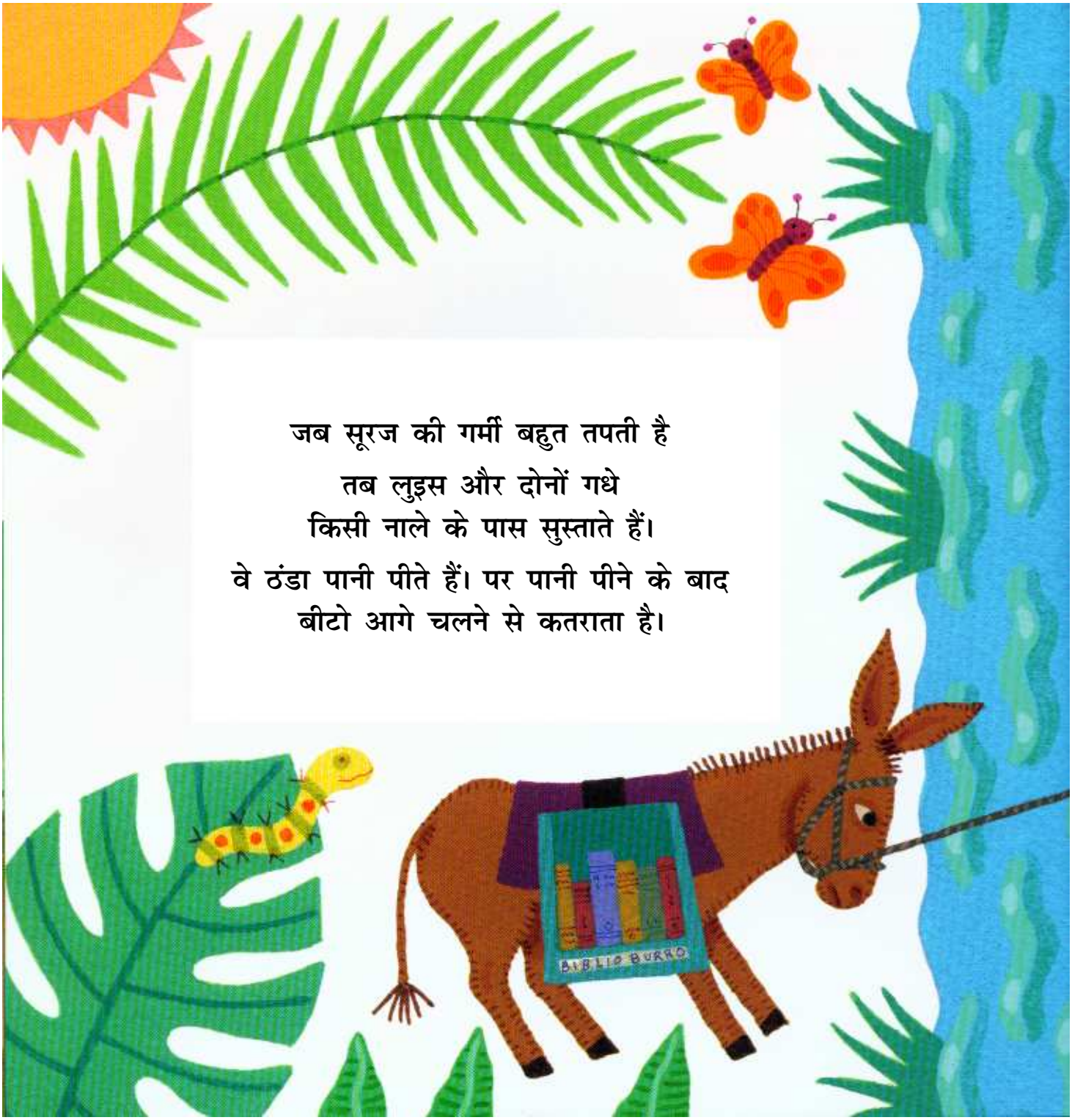

जब सूरज की गर्मी बहुत तपती है
तब लुइस और दोनों गधे
किसी नाले के पास सुस्ताते हैं।
वे ठंडा पानी पीते हैं। पर पानी पीने के बाद
बीटो आगे चलने से कतराता है।

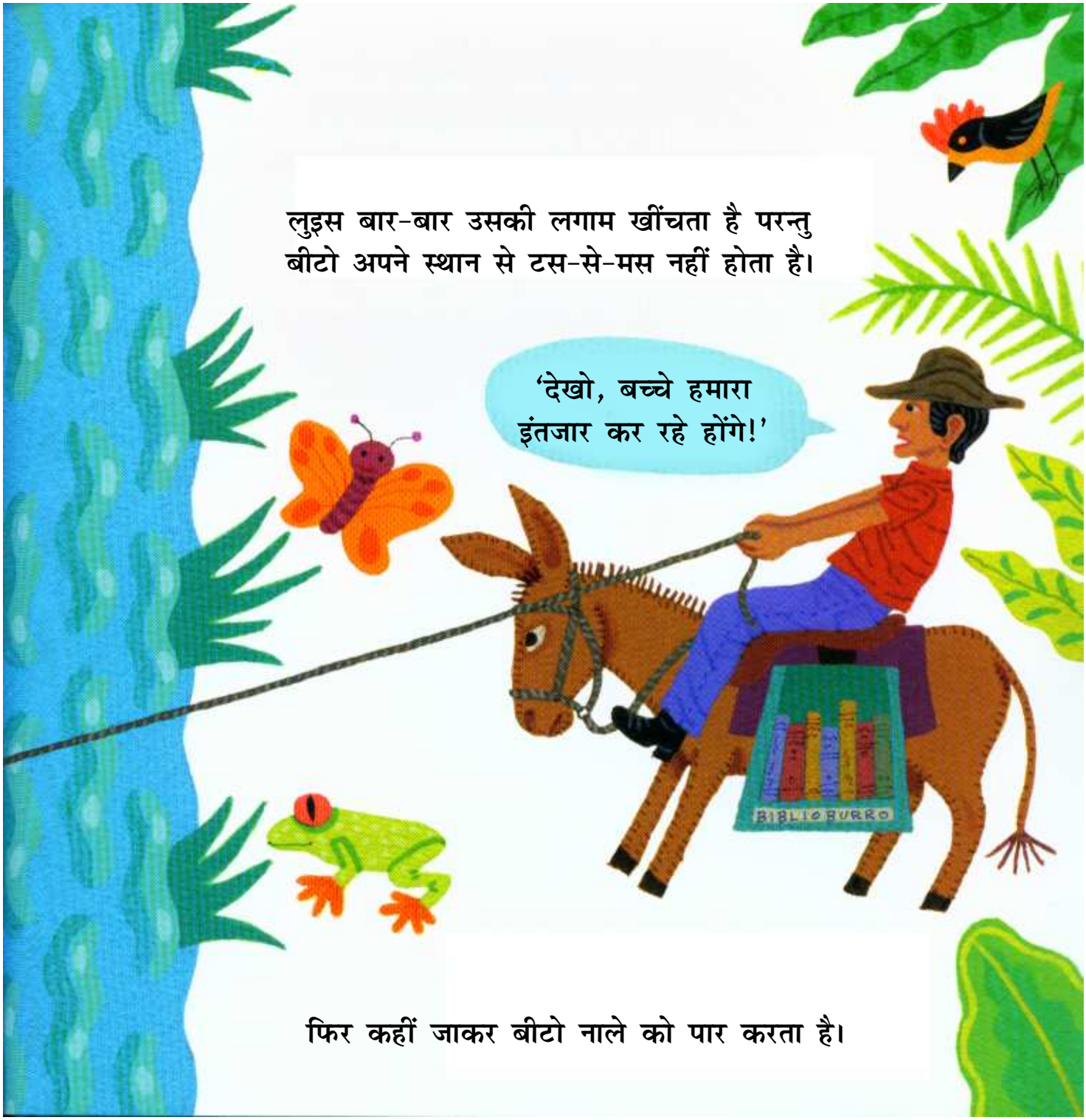

लुइस बार-बार उसकी लगाम खींचता है परन्तु बीटो अपने स्थान से टस-से-मस नहीं होता है।

फिर कहीं जाकर बीटो नाले को पार करता है।

पहाड़ी पर चढ़ते वक्त रास्ता एकदम सुनसान हो जाता है।
वहां केवल चिड़ियों की चहचहाहट सुनायी देती है।
तभी घुप्प अंधेरे में से एक डाकू कूदता है!

‘कृपा हमें जाने दो,’ लुइस प्रार्थना करता है।
‘बच्चे हमारे इन्तजार कर रहे होंगे।’
किताबें देखकर डाकू का पारा चढ़ जाता है।
वो एक किताब रख लेता है और गुर्राकर कहता है।
‘याद रखो, अगली बार मुझे चांदी चाहिए,’

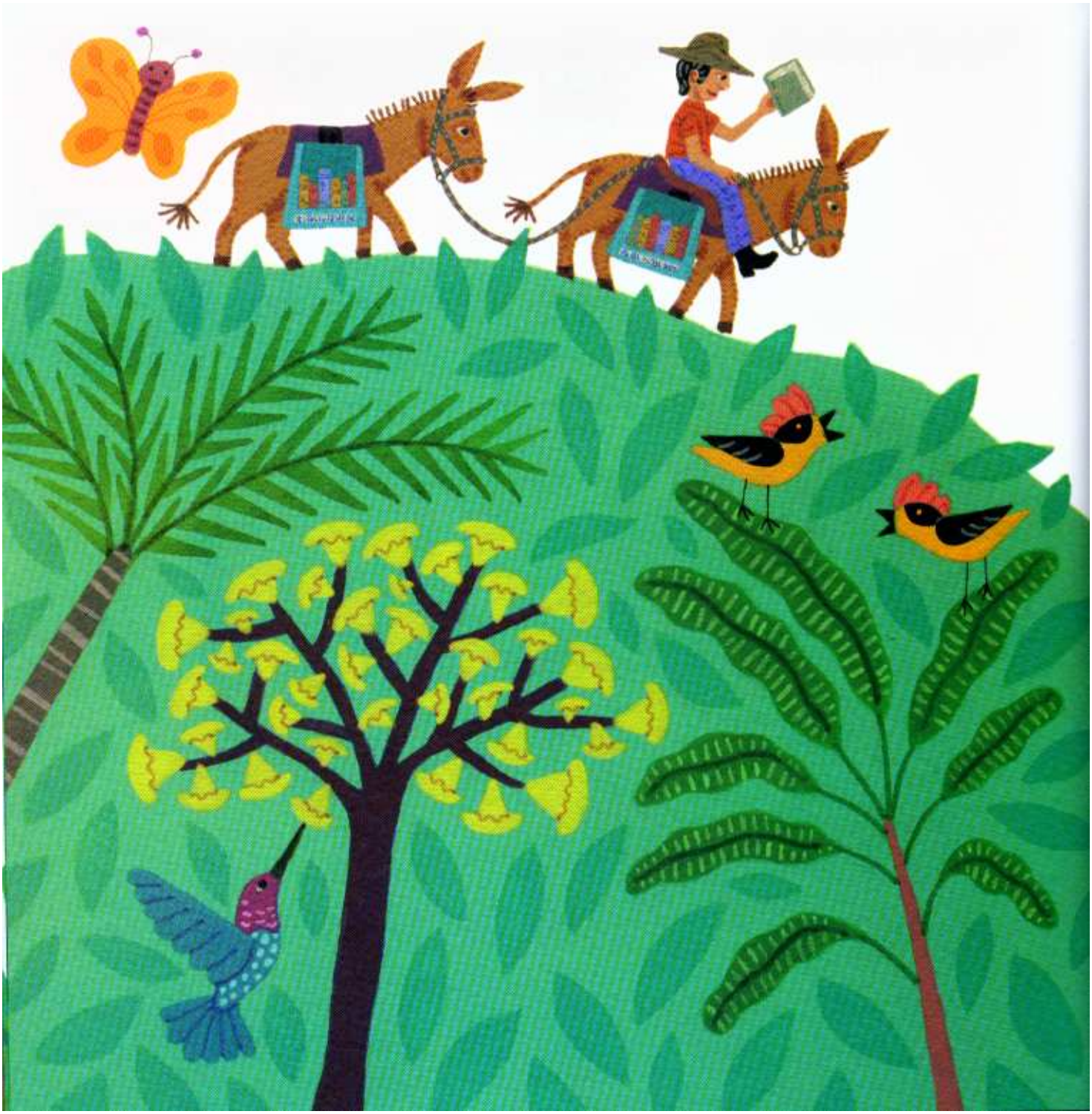

फिर चलता-फिरता पुस्तकालय आगे बढ़ता है
पहाड़ियों को पार करता हुआ, और फिर आखिर में लुइस
को नीचे घर दिखाई देते हैं।
इल-टोरमेन्टो के बच्चे लुइस से मिलने के लिए दौड़ते हैं।

किताबें चुनने से पहले लुइस उन्हें एक कहानी सुनाता है।

'आज मैं तुम्हारे लिए एक अनूठा उपहार लेकर आया हूं,' वो कहता है।

किताबों के ढेर के पीछे से लुइस मुखौटों का एक बंडल निकालता है।
मुखौटे छोटे जानवरों के हैं!

'तुम अपने-अपने मुखौटे पहनो और फिर मैं तुम्हें जानवरों की एक कहानी सुनाऊंगा।'

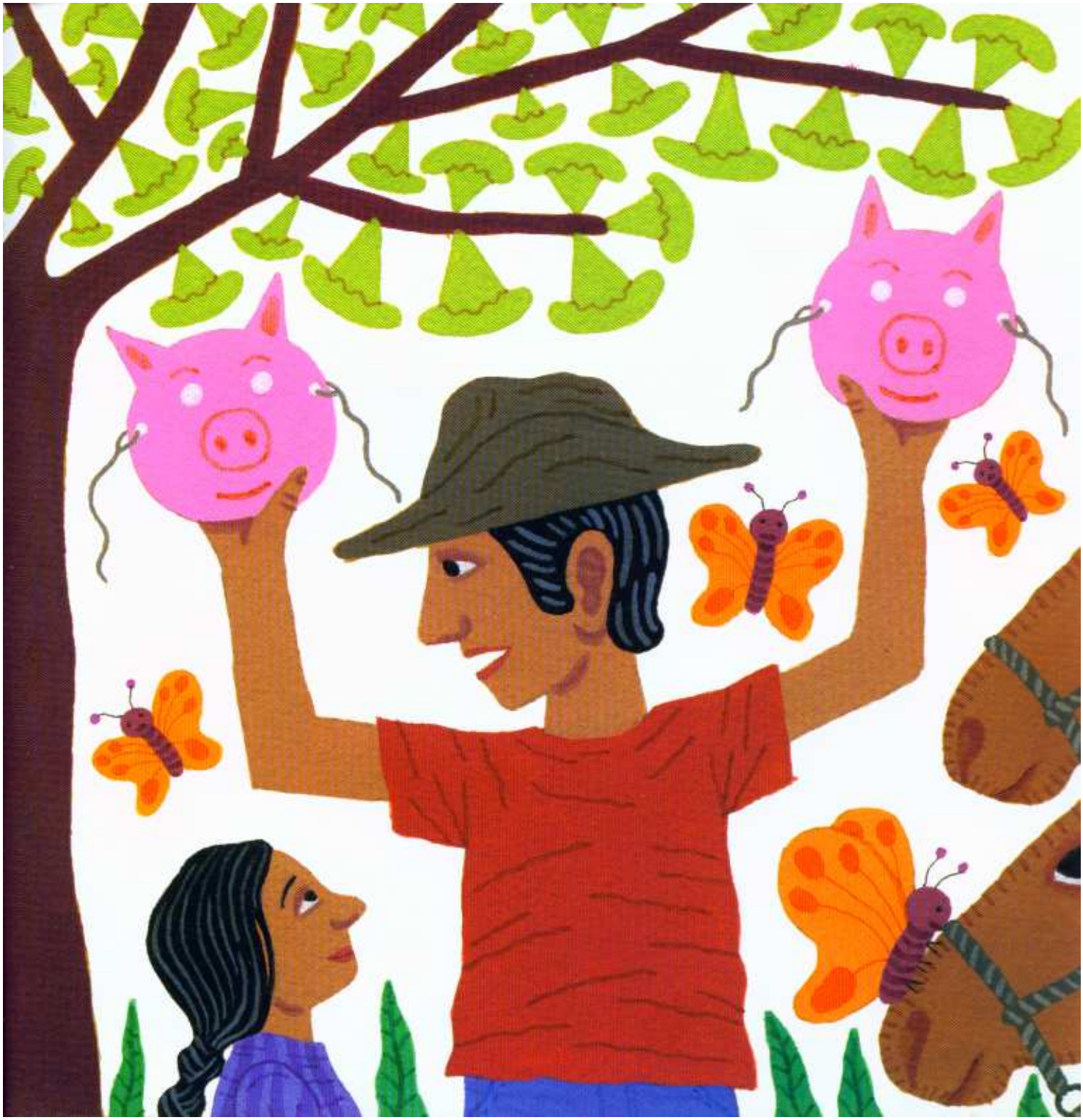

Once upon a time...

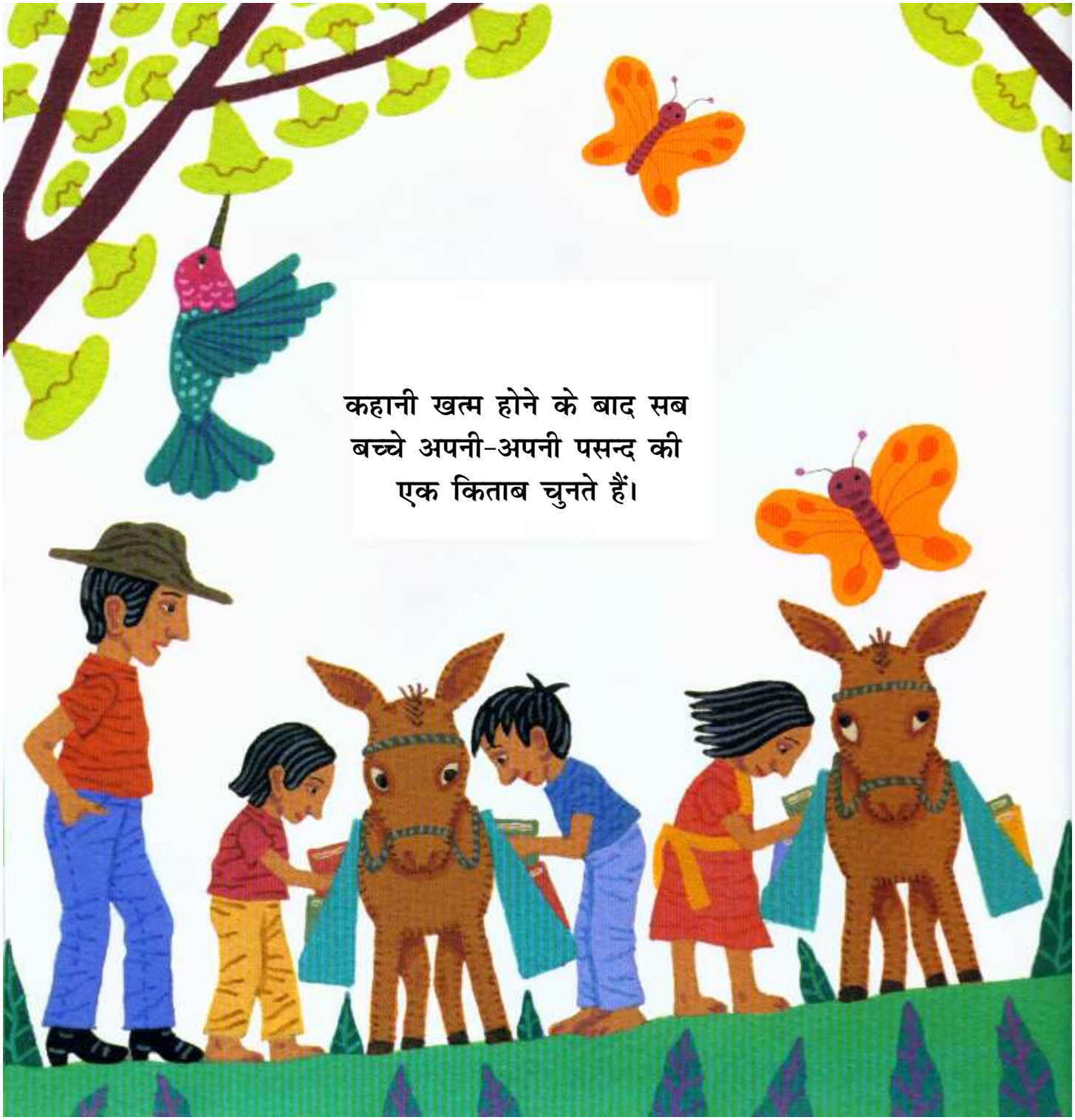

कहानी खत्म होने के बाद सब
बच्चे अपनी-अपनी पसन्द की
एक किताब चुनते हैं।

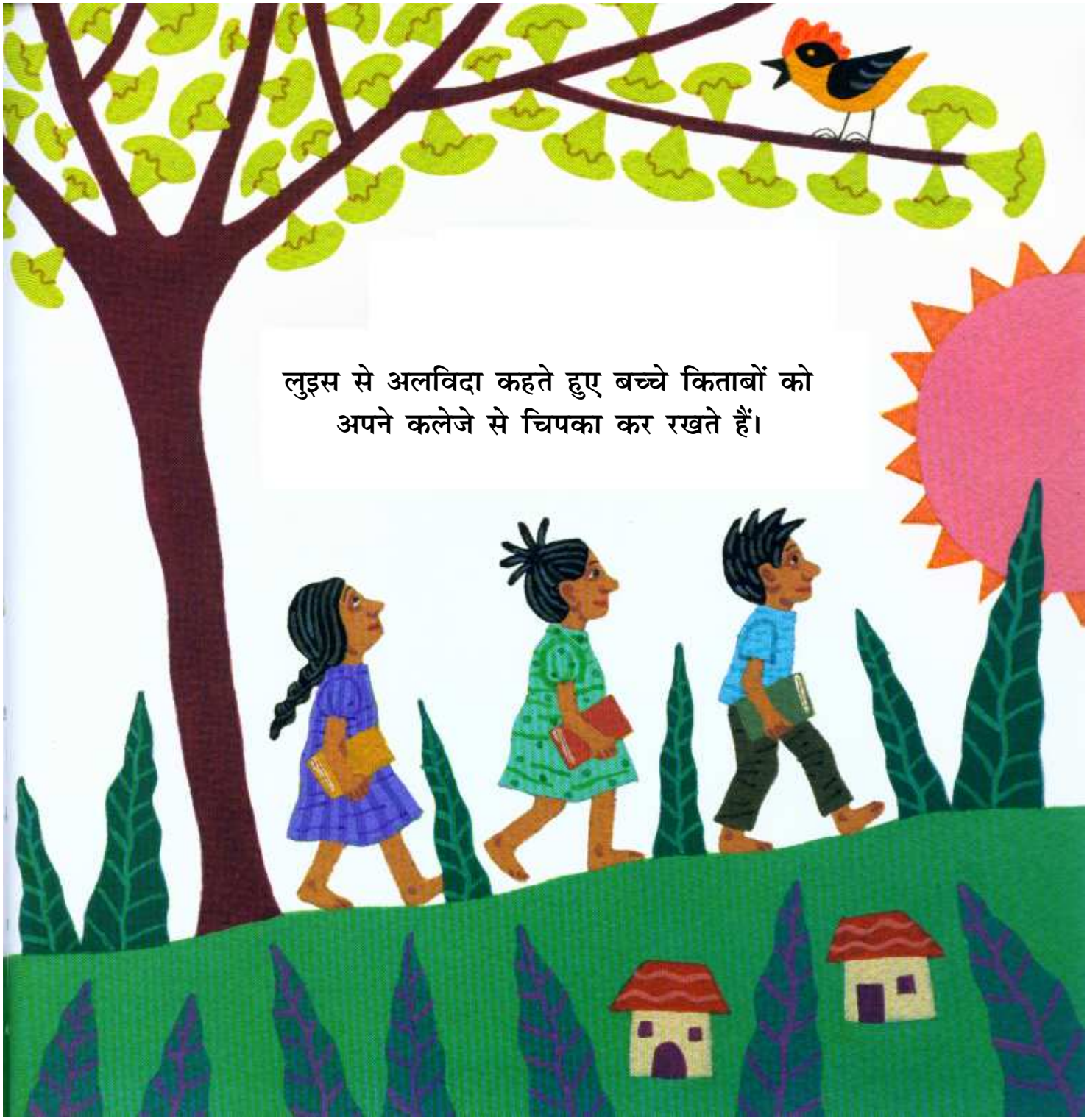

लुइस से अलविदा कहते हुए बच्चे किताबों को
अपने कलेजे से चिपका कर रखते हैं।

लुइस, एल्फा और बीटो पहाड़ियां लांघते हुए घर वापस जाते हैं।

घर पहुंचते-पहुंचते वो तमाम जंगल और नाले पार करते हैं।

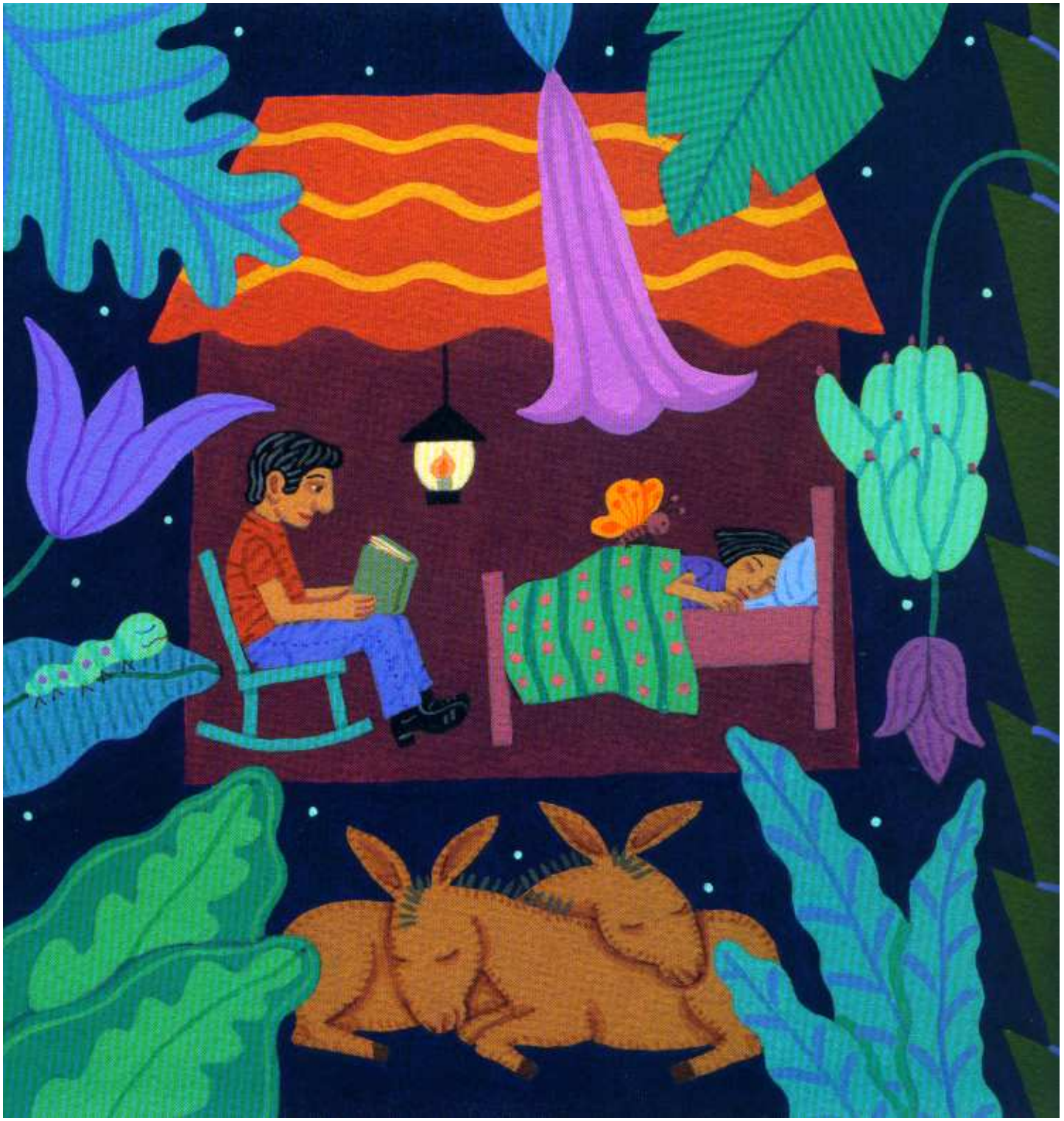

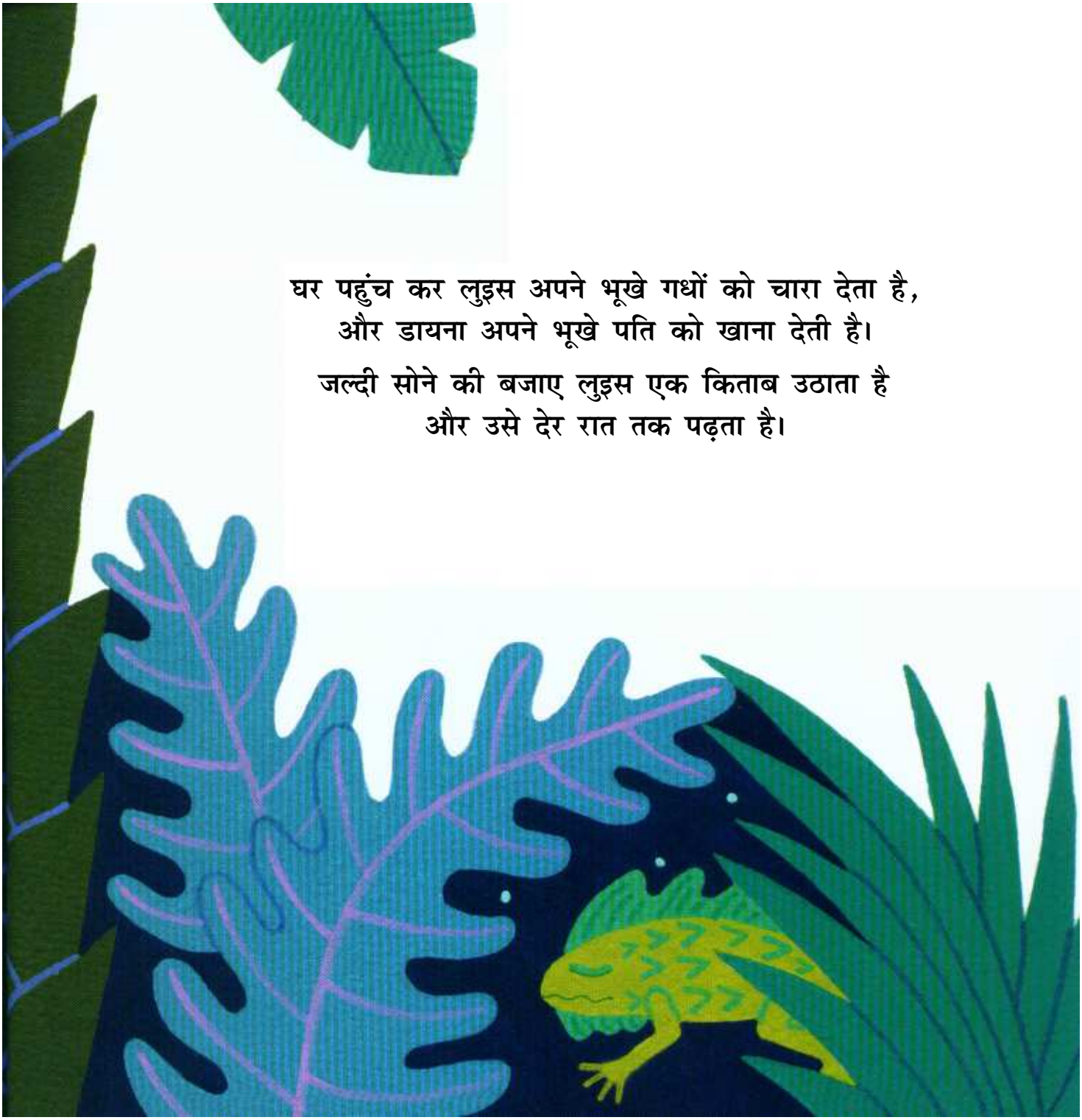

घर पहुंच कर लुइस अपने भूखे गधों को चारा देता है,
और डायना अपने भूखे पति को खाना देती है।

जल्दी सोने की बजाए लुइस एक किताब उठाता है
और उसे देर रात तक पढ़ता है।

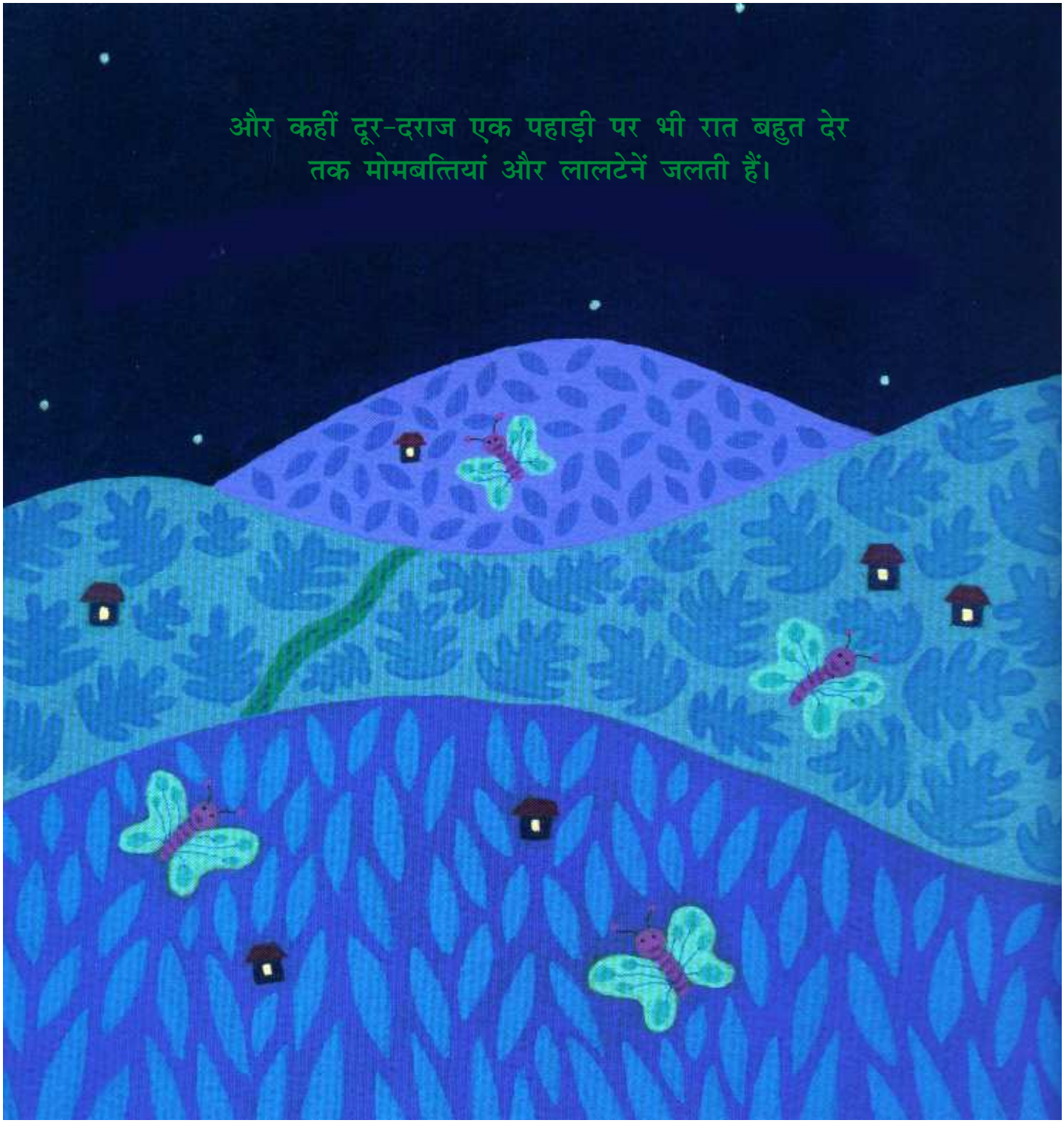
और कहीं दूर-दराज एक पहाड़ी पर भी रात बहुत देर
तक मोमबत्तियां और लालटेनें जलती हैं।

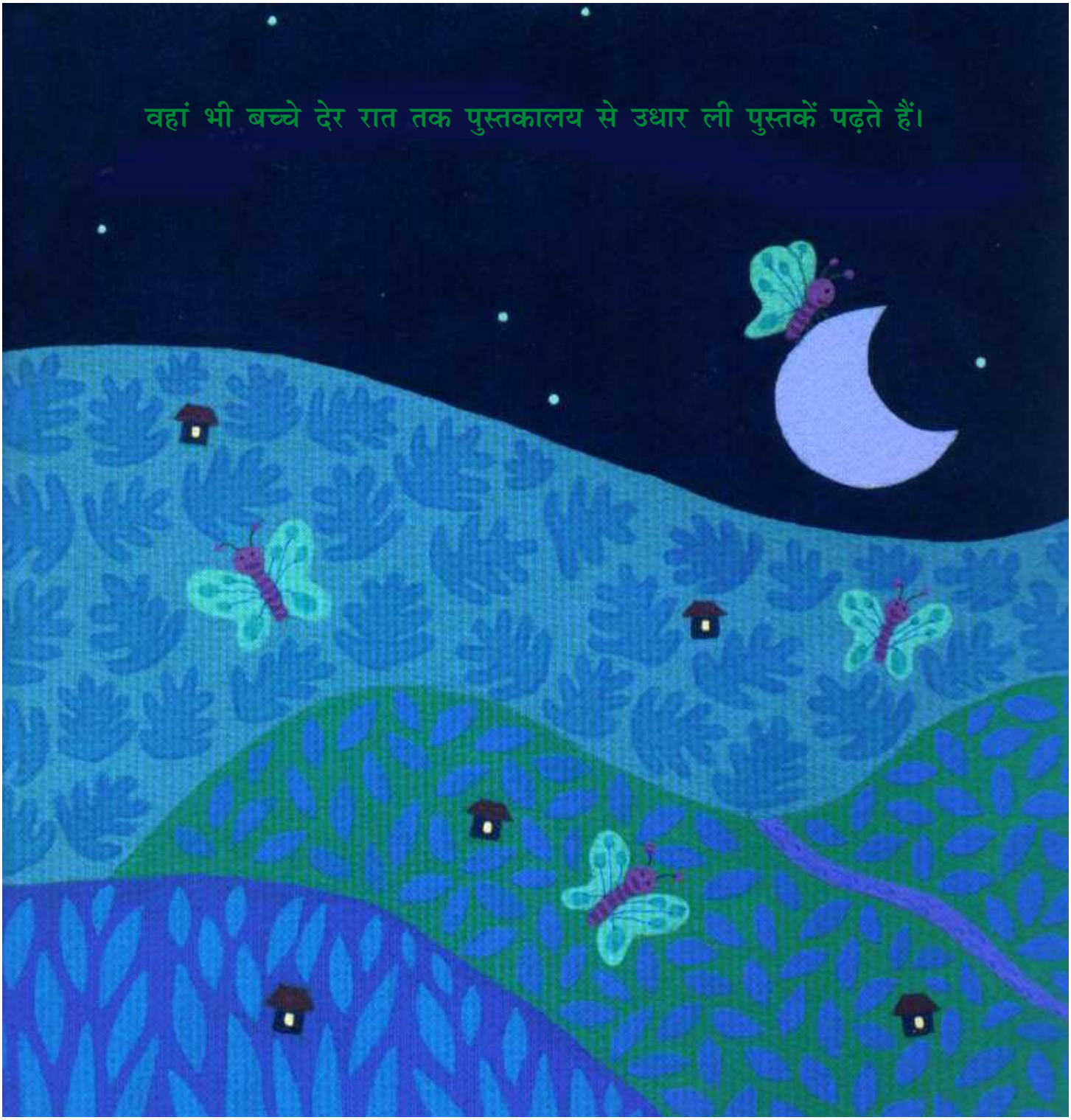
वहां भी बच्चे देर रात तक पुस्तकालय से उधार ली पुस्तकें पढ़ते हैं।

यह कहानी लुइस सोरयिआना की सच्ची जीवनी पर आधारित है। वो कोलम्बिया के एक दूर-दराज कं शहर ला-ग्लोरिया में रहता है। टीचर रह चुकने के कारण लुइस को पुस्तकों की परिवर्तनशील ताकत मालूम थी। लुइस अपनी पुस्तकों को दूर-दराज गांवों में बसे लोगों तक ले जाने को बेताब था। वहां बच्चों के पढ़ने के लिए किताबों की बहुत किल्लत थी। बहुत से घरों में तो एक किताब तक नहीं थी।

साल २००० में लुइस ने अपने दो गधों पर किताबें लादकर दूर बसे गावों में ले जाने की शुरुआत की। उसने मात्र ७० किताबों से शुरुआत की पर आज उसके पास ४८०० किताबें हैं। अधिकांश पुस्तकें लोगों ने दान में दी हैं। हर शनिवार-रविवार को लुइस बियाबान दूर बसे गांवों में जाता है। वहां ३०० लोग किताबें उधार लेने के लिए आतुरता से उसका इंतजार करते हैं। इससे दुनिया का एक कोना सम्पन्न होता है।